Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

सामान्य अध्ययन पेपर-I

भाग-II

आधुनिक भारतीय इतिहास

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

आधुनिक भारतीय इतिहास

CONTENTS **PAGE NO.**

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन	1-20
मराठा शक्ति का उत्कर्ष	21-39
लार्ड वेलेजली की सहायक संधि	40-48
कुटीर उद्योगों का पतन	49-53
भारत में अंग्रेजों की भू-राजस्व नीतियां	54-59
अंग्रेजों के न्यायिक सुधार	60-66
भारत में की अंग्रेजों आर्थिक नीती का विकास	67-115
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन	**116-194**
(प्रथम चरण)	116-118
(द्वितीय चरण)	119-139
(तृतीय चरण)	140-194
साम्यवादी आंदोलन	195-198
लोकतांत्रिक समाजवाद का विकास	199
वामपंथी	200-202
साम्प्रदायिकता	203-212
भारत में शिक्षा विकस	213-221
सत्याग्रह	222-223
सम्मेलन	224-225
प्रमुख व्यक्तित्व	226-229
भारत के संवैधानिक विकास	230-234

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन

→ सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भारत विदेशी व्यापार का एक ऐसा आकर्षण केन्द्र बन गया था कि हर विदेशी राष्ट्र व्यापार के माध्यम से उस पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था। क्योंकि
→ भारत औद्योगिक माल के उत्पादन में एक अग्रणी राष्ट्र था।
→ यहाँ का उच्च कोटि का सूती एवं रेशमी कपड़ा, मसाले, नील, शक्कर, औषधियाँ एवं बहुमूल्य रत्न किसी भी राष्ट्र को लालायित करने के लिए काफी थे।

→ भारत में क्रमशः यूरोपियन शक्तियाँ अपने हित साधने हेतु आयीं -

पुर्तगाल → डच → अंग्रेज → डेनिस → फ्रांसीसी
(1498) (1596) (1600) (1616) (1664)

→ भारत में पुर्तगालियों का प्रवेश -

→ भारत आने वाला प्रथम पुर्तगाली वास्को-डी-गामा था जो 1498 में दक्षिण अफ्रीका का चक्कर लगाता हुआ भारत के पश्चिमी तट के बंदरगाह कालीकट पहुँचा। यहाँ के हिन्दू शासक जमोरिन से मिलकर व्यापार करने की अनुमति प्राप्त की।
→ भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर अल्मेडा (1500-09 ई.) था।
→ भारत में पुर्तगाली शक्ति की महत्वपूर्ण आधारशिला अल्फोंसो डि अल्बुकर्क ने डाली।
→ 1534 में पुर्तगालियों ने बेसीन द्वीप तथा 1556 में सीलोन में अपना व्यापारिक अधिकार स्थापित किया।
→ अब वे भारत में ईसाई धर्म का प्रसार करने लगे तो क्रुद्ध मुगल सम्राट शाहजहाँ ने उन्हें हुगली से बाहर

निकाल दिया।

1639 ई. में मराठो द्वारा इनसे सालसिट और बेसिन द्वीप छीन लिया गया जिससे पुर्तगालियों के अधिकार में मात्र गोवा, दमन और द्वीव ही रह गये।

भारत में प्रेस की स्थापना सर्वप्रथम पुर्तगालियो द्वारा की गई।

भारत में तम्बाकू का परिचय सर्वप्रथम पुर्तगालियो ने ही कराया।

1961 तक पुर्तगालियों का गोआ, दमन और दीव पर अधिकार रहा

अल्मीडा -(1505 -1509)

1505 में फ्रांसिस्को द अल्मीडा प्रथम पुर्तगाली गवर्नर बनकर भारत आया। इसने भारत में जलसामरिक शक्ति का विकास तथा भारत में पुर्तगाली राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। इसने भारत में कुछ दुर्ग भी बनवाये।

अल्बुकर्क (1509 -1515)

अल्मीडा के बाद अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर बना। यह एक कुशल सैनिक तथा निपुण शासक था। इसने दो उद्देश्य निर्धारित किए- भारत में पुर्तगाली शक्ति को सुदृढ़ बनाना तथा भारतीय व्यापार पर एकाधिकार करना। इसने 1510 में बीजापुर के सुल्तान से गोवा छीन लिया। धीरे-धीरे इन्होंने भारत मे किलेबंदी करना शुरु की तथा राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे।

इसने बाद में इण्डोनेशिया के मलक्का के द्वीप पर भी अधिकार किया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत एवं डच (हॉलैण्डवासी)

1596 → केप ऑफ गुड होप होते हुये भारत मे आने वाला प्रथम डच नागरिक कॉरनेलिस डे हस्टमान था।

1602 → हॉलैण्डवासियों ने भारत में "डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी" की स्थापना की।

1602 → बैंटम के पास एक युद्ध मे इन्होने पुर्तगालियों को हराकर अपनी स्थिति मजबूत की।

→ डचो ने भारत में मसालों के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।

1658 → डचो ने पुर्तगालियों से श्रीलंका छीन लिया।

→ इन्होने कभी भी भारतीय राजनीति मे रुचि नही ली।

→ भारत में डचों के प्रमुख केन्द्र - मसुलीपट्टम, पुलिकट, सूरत, विमलीपट्टम, भड़ौंच, कैम्बे, अहमदाबाद, कोचिन, चिनसुरा, कासिम बाजार, बालासोर, आदि।

› 17 वी सदी मे समुद्री मार्गों एवं व्यापार के लिए डचो एवं इंग्लैण्ड के मध्य भंयकर संघर्ष हुआ जिससे डचो को काफी क्षति पहुँची।

1759 - बेदरा के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को हराकर उनकी शक्ति को समाप्त कर दिया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत में डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

डेनमार्क की "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" की स्थापना 1616 ई. मे हुई, इस कम्पनी ने 1620 मे त्रैंकोबार (तमिलनाडु) तथा 1668 में सेरामपुर (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित की
सेरामपुर डेनों का प्रमुख केन्द्र था।
1854 में डेनो ने अपनी वाणिज्यिक कम्पनी अंग्रेजों को बेच दी।

भारत एवं फ्रांसीसी

भारत में व्यापार हेतु आने वाली यूरोपीय जातियों में सबसे आखिरी जाति फ्रांसीसी थी।
~~सन् 1664 मे "फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी" की स्थापना की गई~~
यह एक सरकारी कम्पनी थी।
1668 मे सूरत में फ्रांसीसियों ने अपना प्रथम कारखाना स्थापित किया।
1669 में मछलीपट्टनम में दूसरे फ्रांसीसी कारखाने की स्थापना की। 1690 में चन्द्रनगर मे फ्रांसीसियों ने अपना कारखाना स्थापित किया।
~~1739 में फ्रांसीसियों को कालीकट आधार स्वरूप मिला~~
1742 मे डूप्ले गवर्नर बनकर भारत आया जो उसके काल मे फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएं और अधिक बढ़ गई। तो इनका ~~एवं~~ अंग्रेजों से

Toppersnotes
Unleash the topper in you

संघर्ष हुआ। दोनों शक्तियों के मध्य अनेक युद्ध हुए। अन्त मे 1760 ई. मे वांडीवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह से पराजित किया। 1763 मे पेरिस की संधि के साथ ही "सप्तवर्षीय युद्ध" समाप्त हो गया। इसके साथ ही भारत में फ्रांसीसी प्रभुत्व समाप्त हो गया।

अंग्रेजों की विजय एवं फ्रांसीसियों की पराजय के कारण -

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक निजी संस्था थी, अतः इसके सदस्यों एवं कर्मचारियों में आत्मनिर्भर रहने एवं प्रगति करने की भावना प्रबल थी। जबकि फ्रांसीसी कम्पनी एक सरकारी संस्था थी जिसके कारण इसके कर्मचारी ज्यादा सक्रिय नहीं थे। उनमे भ्रष्टाचार व्याप्त था। अतः इनका पतन अनिवार्य था।

अंग्रेजों की नौसैनिक शक्ति की श्रेष्ठता दूसरा प्रमुख कारण थी। अपनी श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति के कारण समुद्री व्यापार पर इनका एकाधिकार था।

अंग्रेजों का प्रमुख नौसैनिक अड्डा मुम्बई में था जबकि फ्रांसीसी नौसैनिक अड्डा फ्रांसीसी द्वीप पर था जो काफी दूर था। इस कारण फ्रांसीसी मदद देर से पहुँच पाती थी जबकि अंग्रेज शीघ्र ही पहुँच जाते थे।

~~अंग्रेजों ने 03 नगरों बम्बई, कलकत्ता और मद्रास~~ में अपनी बड़ी फैक्ट्रियां/ कैंटोनिया स्थापित की जबकि फ्रांसीसियों के पास एक ही मुख्य स्थान था - पॉण्डिचेरी।

अंग्रेजों ने सदैव वाणिज्यिक महत्व के स्थानों पर कब्जा

Toppersnotes
Unleash the topper in you

जमाया जबकि अन्य कम्पनियों ने अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण स्थानों पर निवास किया। जैसे अंग्रेजों ने बंगाल को केन्द्र बनाया वही फ्रांसीसियों ने दक्कन में अपना प्रभाव जमाया।

ब्रिटिश कम्पनी ने व्यापार पर विशेष ध्यान दिया जबकि फ्रांसीसियों ने क्षेत्रीय विस्तार को महत्व दिया। इस कारण उनकी आर्थिक दशा बिगड़ गई।

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को फ्रांसीसी कम्पनी की तुलना में बेहतर नायक मिले।

अंग्रेज अधिकारियों को प्रोत्साहन मिलता रहता था जबकि फ्रांसीसी अधिकारियों को उल्टे निरुत्साहित किया जाता था जैसे डूप्ले को किया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारत एवं अंग्रेज

31 दिस. 1600 को अंग्रेजों ने भारत में व्यापार करने के लिए महारानी एलिजाबेथ से आज्ञा पत्र प्राप्त किया। तथा भारत में "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" की स्थापना की। जिसका आधिकारिक नाम था- "दि गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन्टू दि ईस्ट इण्डीज। प्रारम्भ में अंग्रेज व्यापारियों को 15 वर्ष के लिए आज्ञा पत्र प्रदान किया गया था।

1608 में कप्तान बॉकिन्स इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम से आज्ञा पत्र लेकर मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आया।

1613 में सूरत में अंग्रेजों की व्यापारिक कोठी स्थापित की गई।

1615 में सर थॉमस रो व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए भारत आया। युवराज खुर्रम से वह व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने में सफल रहा। तत्पश्चात् भड़ौंच, अहमदाबाद, एवं आगरा में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित की।

1639 में अंग्रेजी कम्पनी ने मद्रास में एक सुदृढ़ दुर्ग बनाया।

1661 में पुर्तगालियों ने मुम्बई को दहेज के रूप में अंग्रेजों को दे दिया।

1686 में कलकत्ता में भी अंग्रेजों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना कर ली।

इसी बीच मुगल साम्राज्य के पतन के लक्षण दिखने प्रारम्भ हो गये जिससे अंग्रेजों के प्रभाव में वृद्धि होने लगी और वे व्यापार के साथ-साथ भारतीय राजनीति में भी हस्तक्षेप करने लगे।

1756-63 में हुए लड़े गये सप्तवर्षीय युद्ध के बाद अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों की शक्ति को भी कुचल दिया।

1717 ई. में फर्रुखसियर ने एक शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को अनेक व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान की।

इसी दौरान अंग्रेजों की नजर बंगाल पर पड़ी। वहाँ पर अभी नवाब सिराजुद्दौला था। सिराजुद्दौला अंग्रेजों की बढ़ती शक्ति से आशंकित था। वहीं अंग्रेज भी सिराजुद्दौला के व्यवहार से प्रसन्न नहीं थे। अतः अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के प्रतिद्वन्द्वियों एवं हिन्दू व्यापारियों को भड़काना शुरू किया। अंग्रेजों ने नवाब के विरोधियों को भी संरक्षण देना प्रारम्भ किया। अंग्रेज "दस्तक प्रथा" का दुरुपयोग करने लगे। तथा बंगाल की किलेबंदी करनी भी शुरू कर दी।

अंग्रेजों ने नवाब को कासिम बाजार की फैक्ट्री दिखाने से भी मना कर दिया।

कासिम बाजार पर ~~नबाब~~ नवाब का आक्रमण -

→ अंग्रेजों की उपर्युक्त गतिविधियों के कारण 4 मई 1756 को सिराजुद्दौला ने कासिम बाजार पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

→ हॉलवेल के अनुसार "काल कोठरी" की घटना 20 जून हुई

$18 \times 14 \times 10$ (L W H) = 146 → 23 जीवित बचे

नवाब ने कलकत्ता का नाम बदलकर अलीनगर कर दिया।

अंग्रेजों की पराजय की खबर सुनकर मद्रास से एडमिरल वाटसन ~~द्वारा~~ की अध्यक्षता में एक सेना जलमार्ग द्वारा तथा एक सेना लॉर्ड क्लाइव की अध्यक्षता में स्थल मार्ग ~~द्वारा~~ बंगाल भेजी गई। उसने कलकत्ता पर पुनः अधिकार कर लिया। तत्पश्चात 9 फरवरी 1757 ई में नवाब एवं अंग्रेजों के मध्य अलीनगर की संधि हुई।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अलीनगर की संधि की प्रमुख शर्तें -

→ नवाब द्वारा अंग्रेजों से छीनी गई सम्पत्ति, फैक्ट्री तथा किले अंग्रेजों को वापिस कर दिये गये।
→ मुगल बादशाह द्वारा अंग्रेजों को दी गई सभी सुविधाएँ नवाब ने भी स्वीकार कर लीं।
→ अंग्रेजों को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में बिना चुंगी दिये व्यापार की अनुमति दी गई।
→ अंग्रेजों को कलकत्ता की किलेबंदी करने की छूट दी गई।
→ अंग्रेजों को कलकत्ता में अपने सिक्के चलाने का अधिकार दिया गया।
→ दोनों एक-दूसरे के शत्रु को अपना शत्रु मानेंगे।
→ नवाब की सुरक्षा का आश्वासन दिया गया।

इस संधि के बावजूद भी अंग्रेज सिराजुद्दौला के प्रति आशंकित रहते थे अतः वे उनकी जगह ऐसे व्यक्ति को सम्राट बनाने की कोशिश कर रहे थे जो उनके हितों का ख्याल रखे। इनकी खोज पूरी हुई मीर जाफर पर जाकर। जो कि नवाब का सम्बन्धी एवं सेनापति था। मीर जाफर एवं अंग्रेजों के बीच यह एग्रीमेन्ट हुआ कि मीर जाफर को नवाब बनाया जायेगा बदले में नवाब बनने के बाद जाफर अंग्रेजों की सहायता करेगा। अब अंग्रेज सिराजुद्दौला पर आक्रमण करने का अवसर खोजने लगे। शीघ्र ही यह अवसर भी तलाश लिया गया। ~~क्लाइव ने यह~~ आरोप लगाया कि नवाब अलीनगर संधि की शर्तों को तोड़कर फ्रांसीसियों को लाभ पहुँचा रहा है। नवाब का जवाब मिलता, उससे पूर्व ही अंग्रेजों ने उस पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण की सूचना मिलते ही

नवाब भी राजधानी से प्लासी के मैदान में आ गया। 23 जून 1757 को यह युद्ध हुआ। पूर्व में किए गये समझौते के तहत मीर जाफर एवं दुर्लभराय युद्ध में निष्क्रिय रहे तथा नवाब सिराजुद्दौला को पकड़कर उसका वध करवा दिया गया।

25 जून 1757 को क्लाइव ने मीर जाफर को बंगाल, बिहार तथा ओड़ीसा का नवाब बना दिया। अब नवाब अंग्रेजो के हाथों की कठपुतली बन गया।

प्लासी के युद्ध के कारण -

→ अंग्रेजों द्वारा सिराजुद्दौला के ~~मध्य~~ खिलाफ षड्यंत्रों को प्रोत्साहन देना।

→ अंग्रेजो द्वारा नवाब के प्रति अशिष्टता दर्शाना तथा नजराना देना बंद करना।

→ नवाब को कासिम बाजार की फैक्ट्री नहीं दिखाना।

→ अंग्रेजों द्वारा नवाब की आज्ञाओं की अवज्ञा करना।

→ दस्तक प्रथा का दुरूपयोग करना

→ नवाब द्वारा मना करने के बावजूद कलकत्ता के किले की किलेबंदी करना।

→ नवाब के शांति प्रयासों का विफल हो जाना।

→ अलीनगर की संधि का उल्लंघन

→ ब्लैकहोल की घटना

→ अंग्रेजों की महत्वाकांक्षाएँ

→ ~~विश्वासघाती~~ की महत्वाकांक्षाएँ

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्लासी युद्ध का महत्व -

प्लासी के युद्ध का सामरिक महत्व नहीं था क्योंकि यह विश्वासघात के आधार पर जीता गया था। यह सही मायने में युद्ध नहीं था।

इस युद्ध से बंगाल पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित हो गया।

बंगाल का नवाब अंग्रेजों की कठपुतली बनकर रह गया।

युद्ध एवं इसके बाद की लूट ने अंग्रेजों को इतना सक्षम बनाया कि इसके परिणामस्वरूप उन्होंने उत्तर भारत पर भी अधिकार कर लिया तथा दक्कन को तो पूर्णतः पराजित कर दिया।

प्लासी युद्ध के पश्चात कम्पनी आर्थिक शक्ति के साथ-2 राजनैतिक शक्ति भी बन गई।

युद्ध के पश्चात अन्य यूरोपिय शक्तियाँ पिछड़ गई तथा कालान्तर में वे समाप्त भी हो गई।

मुगल सम्राट की प्रतिष्ठा को आघात लगा।

~~इन सब के परिणामस्वरूप भारत में ब्रिटिश शासन की~~ स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया।

अंग्रेज भारतीयों की विश्वासघाती प्रवृत्ति और राजनीतिक अदूरदर्शिता से परिचित हुये

कम्पनी के कर्मचारियों पर से नवाब का नियंत्रण समाप्त हो गया।

अंग्रेजों को आर्थिक लाभ हुआ, बंगाल उनके लिए दुधारु गाय बन गया।

सम्पन्न बंगाल कंगाली की कगार पर पहुँच गया।

मीर जाफर एवं अंग्रेज -

प्लासी युद्ध के पश्चात् मीर जाफर को नवाब बनाया गया। मीर जाफर को 1 करोड़ 70 लाख रुपया युद्ध हर्जाने के रूप में देने थे लेकिन खजाना खाली था। धीरे-धीरे बंगाल की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी तो अंग्रेजों ने उसके दामाद मीर कासिम को नवाब बना दिया।

मीर कासिम एवं अंग्रेज -

मीर कासिम भी नवाब बनने के लिए उतावला था अतः उसने वादा किया कि वर्द्धमान, मिदनापुर एवं चटगाँव की जागीरदारी वह अंग्रेजों को दे देगा। उसने नवाब बनने के बाद अंग्रेजों की माँगे पूरी की। तत्पश्चात् उसने अपनी राजधानी मुंगेर बना दी तथा वहाँ की किलेबंदी भी कर दी। उसने 40,000 सैनिक उसकी रक्षार्थ ~~किए~~ तैनात किये। उसने अंग्रेजों के व्यक्तिगत व्यापार पर कर लगाया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने नवाब के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

अंग्रेजों ने मीर कासिम के स्थान पर पुनः मीर जाफर को नवाब बनाने का ऑफर दिया। वह पुनः नवाब बना। इसके पश्चात् अंग्रेजी सेना एडम्स के नेतृत्व में मुर्शिदाबाद की तरफ रवाना हुई। उधर मीर कासिम भी तैयार था उसने मीर तकी के नेतृत्व में सेना रवाना कर दी। लेकिन मीर तकी एक युद्ध में बीच रास्ते में ही मारा गया।

Q. 23 जून, 1757 ई. को भारत में आधुनिक युग की शुरुआत होती है?

Solution -

→ किसी भी युग की शुरुआत किसी तारीख विशेष से प्रारम्भ नहीं होती है

~~अंग्रेजो~~

मीर कासिम के सुधार -

सैनिक सुधार -

→ राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर ले गया।
→ यूरोपीय पद्धति पर सेना पुनर्गठित की।
→ तोपों एवं बंदूकों के कारखाने स्थापित किए।
→ उद्दण्ड एवं अंग्रेज समर्थक अधिकारियों को दण्डित किया जैसे कि - रामनारायण

आर्थिक सुधार -

→ राज्य के व्यय को अनुशासित किया।
→ विभिन्न प्रकार के गबन को रोका।
→ "खिजरी जमा" नामक कर वसूला।
→ अनेक नए कर लगाये गए।
→ अधिकारियों को नियमित वेतन दिया गया।

~~→ प्रशासनिक~~ इकाइयों को पुनर्गठित किया। उसे कार्यकुशल-चुस्त-दुरुस्त बनाया गया।

अंग्रेजों की विजय के कारण -

सशक्त नौसैनिक शक्ति (समुद्र में अग्रणी)
बंगाल के संसाधनों पर आधिपत्य
प्रबल प्रतिद्वन्द्वी का अभाव।
सभी भारतीय रियासतें संघर्षों में लीन थीं
अंग्रेज स्थल सेना की दृष्टि से भी शक्तिशाली थे।
अस्त्र -शस्त्रों की दृष्टि से भी अंग्रेज मजबूत थे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उदयनाला युद्ध -
मीरजाफ़र की मृत्यु के पश्चात अंग्रेज़ कम्पनी की सेना और मीर कासिम की सेना के बीच उदयनाला का युद्ध हुआ। जिसमें कासिम बुरी तरह पराजित हुआ।

पटना हत्याकाण्ड -
उदयनाला के युद्ध में पराजित होने के बाद भी कासिम ने धैर्य नहीं खोया तथा उसने पटना की ओर प्रस्थान किया क्योंकि वहाँ पर अंग्रेज गवर्नर ने कुछ भारतीय और अंग्रेज बंदियों का कत्ल करवा दिया था। जो इतिहास में "पटना काण्ड" के नाम से प्रसिद्ध है।

अंग्रेज सेना और मीर कासिम के बीच हुए युद्धों में कटवा, मुर्शिदाबाद, गिरिया, सूती, उदयनाला, मुंगेर आदि युद्धों में कासिम को भारी पराजय झेलनी पड़ी।

कासिम भागकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में चला गया। वहाँ पर मौजूद मुगल सम्राट शाह आलम-II भी मीर कासिम की सहायता हेतु तैयार हो गया।

यहाँ से संयुक्त सेना पटना की ओर बढ़ी। विद्वानों के अनुसार इनकी सेना में 40 से 60 हजार सैनिक थे। अंग्रेजी सेना पहले से ही तैयार थी जिसका नेतृत्व मुनरो के पास था इनकी सेना में 70,000 सैनिक थे तथा 20 तोपें थीं। 22 अक्टूबर को संयुक्त सेना एवं अंग्रेजी सेना के मध्य ऐतिहासिक बक्सर युद्ध हुआ जिसमें जीत अंग्रेजों की हुई। इसी युद्ध के बाद इलाहाबाद की संधि हुई।

बक्सर युद्ध के कारण -

→ नवाब एवं अंग्रेजों के हितों में पारस्परिक टकराव होना।

→ बंगाल के सन्दर्भ में अंग्रेजों की अनेक राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं थीं ~~से बंगाल~~ बंगाल का नवाब अपनी शक्तियों को बढ़ाना चाहता था। इस विरोधाभास का निर्णय केवल युद्ध द्वारा ही हो सकता था।

→ प्लासी युद्ध के परिणामों से प्रेरित होकर कम्पनी ने तानाशाही प्रवृत्तियाँ अपनानी शुरू कर दी। इससे नवाब की प्रतिष्ठा एवं महत्ता को आघात लगा।

नवाब के सुधार कार्यों ने अंग्रेजों को आतंकित कर रखा था अतः अविश्वास की खाई बढ़ने लगी।

तात्कालिक कारण - मीर कासिम द्वारा सभी प्रकार के आन्तरिक करों को समाप्त कर देना। अंग्रेजों ने इसे अपनी प्रतिष्ठा पर आघात समझा।

बक्सर युद्ध का महत्व -

→ यद्यपि भारत के भावी इतिहास को लेकर निर्णय प्लासी युद्ध में हो चुके थे, केवल उनका सत्यापन होना शेष था। बक्सर के युद्ध ने वही किया और उसने प्लासी के निर्णय पर मोहर लगा दी थी कि भविष्य में भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण होगा।

→ इस युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों को चुनौती देने वाला कोई नहीं बचा।

→ बंगाल का नवाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन था। अवध का नवाब (शुजाउद्दौला) अंग्रेजों पर निर्भर था तथा मुगल सम्राट (शाह आलम) पेंशनर था। अर्थात्